"डॉ. जयप्रकाश कर्दम के उपन्यास 'उत्कोच' के नायक 'मनोहर' के आदर्शवादी व्यक्तित्व का मूल्यांकन"

सुमीर ठाकरे[1]
डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन

शोध सारांश -

डॉ. जयप्रकाश कर्दम का हिन्दी भाषा के साहित्यकारों में दलित चेतना के संदर्भ में विशिष्ट स्थान है। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, बाल-साहित्य एवं अनुदित रचनाओं के लेखन में अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करायी है। उन्हें साहित्य के प्रति विशेष अनुराग है। उन्होंने अपने एक साक्षात्कार में व्यक्त किया था कि 'साहित्य मुझे जिंदा रखने में मददगार है।' जयप्रकाश जी के प्रसिद्ध उपन्यास 'करुणा', 'छप्पर', 'उत्कोच' है। प्रस्तुत शोध पत्र में जयप्रकाश जी द्वारा रचित 'उत्कोच' उपन्यास के नायक 'मनोहर' के व्यक्तित्व का मूल्यांकन आदर्शवादी व्यक्तित्व के परिप्रेक्ष्य में किया है। इस आकलन में उपन्यास में चित्रित आदर्शवादी, भ्रष्टाचार विरोधी, ईमानदारी आदि मूल्यों का शोधपरक दृष्टि से विचार किया गया है।

कुंजी शब्द - डॉ.जयप्रकाश कर्दम, हिन्दी भाषा, साहित्यकार, दलित चेतना, उत्कोच, उपन्यास, कविता, कहानी, बाल-साहित्य।

डॉ. जयप्रकाश कर्दम का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न है। उनका व्यक्तित्व बहुआयामी एवं सर्जनशील रहा है। दलितों के प्रति उनका दृष्टिकोण पारम्परिक रूप से हटकर यथार्थवादी रहा है, वे उनकी मानसिकताओं का सूक्ष्म चित्रण करते हैं। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व को जानने और समझने के लिये हमें उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व को जानना, समझना आवश्यक होता है। "किसी भी साहित्यकार या व्यक्ति की पहचान हम उसके बाह्य अंग से कर सकते हैं, पर कभी-कभी जो जैसा दिखता है वह वैसा होता नहीं है। बाह्य व्यक्तित्व में हम किसी भी व्यक्ति के शरीर, रंग-रूप, रहन-सहन, खान-पान

[1] शोधार्थी, सेवासदन महाविद्यालय, बुरहानपुर (म.प्र.)
शोध निर्देशक, सह-प्राध्यापक(हिन्दी), सेवासदन महाविद्यालय, बुरहानपुर (म.प्र.)

आदि देख सकते हैं। ठीक उसी प्रकार डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी भी सुदृढ़ शरीर से सम्पन्न, गौर वर्णीय, ऊँचे कद के धनी हैं। उनका बाह्य व्यक्तित्व प्रभावषाली रहा है। वे मृदुभाषी, मितभाषी होने के साथ-साथ शांत स्वभाव के धनी हैं। उन्हें सादा रहन-सहन पसंद है। वे अपने एक साक्षात्कार 'नेशनल दस्तक' में कहते हैं कि 12 घण्टे नौकरी करने के बाद आदमी का किसी भी चीज में मन नहीं लगता, क्योंकि वह सुबह से इधर की फाईल उधर करके थक जाता है। पर कर्दम जी को इन बातों से परहेज है। उन्होंने अपनी साहित्य साधना की रुचि नहीं छोड़ी है। वे नित नये साहित्य सृजन करते रहते हैं वे कहते हैं 'आदमी चाहे तो हर काम सम्पन्न कर सकता है, अगर उसके पास अच्छी लगन हो।"1

किसी भी साहित्यकार या व्यक्ति को हम बाहर से देखकर उसका बाह्य रूप जान-समझ सकते हैं मगर उसे आंतरिक रूप से जानना है तो उसके नजदीक जाना होता है, तभी उसके विचार, आंतरिक भाव हमारी समझ में आते हैं। कर्दम जी का साहित्य का पठन कर उनके आंतरिक व्यक्तित्व को जाना-समझा जा सकता है। कर्दम जी में चिंतन-मनन की प्रवृत्ति अत्यधिक है। वे कहते हैं कि "मै मानता हूँ कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त हमारा जीवन जीने के लिये है। सबको समान रूप से जीने का अधिकार और अवसर होना चाहिये। जीवन के प्रति मेरा दृष्टिकोण सदैव सकारात्मक रहा है। विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखकर हमें आगे बढ़ने के लिये हमेषा प्रयत्नशील रहना चाहिये। जीवन में सफलता के लिये परिश्रम आत्मविष्वास तथा अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा और ईमानदारी का होना आवश्यक है। संघर्ष और आपदाएँ हमें मजबूती प्रदान करती हैं। हमें ताकत देती हैं।"2 कर्दम जी का ये कथन उनके व्यक्तित्व के आदर्शवादी आयाम को अभिव्यक्त करते हैं। यह भी माना गया है कि रचनाकार के व्यक्तित्व का बिम्ब उसकी रचना में अवष्य झलकता है। 'उत्कोच' उपन्यास का नायक 'मनोहर' भी इन्हीं गुणों से ओप्रोत है।

- **उद्देश्य :-** प्रस्तुत शोध हेतु निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये :-

1. श्री जयप्रकाश कर्दम द्वारा रचित उपन्यास 'उत्कोच' का संक्षिप्त परिचय प्रदान करना।
2. 'उत्कोच' उपन्यास के नायक 'मनोहर' के आदर्शवादी व्यक्तित्व संदर्भित उद्धरण प्रस्तुत करना।
3. ईमानदार, परिवार के प्रति समर्पित, परिश्रमी, नौकरी के प्रति निष्ठावान, भ्रष्टाचार विरोधी आदि मूल्यों का आकलन आदर्शवादी व्यक्तित्व के संदर्भ में करना।
4. 'उत्कोच' उपन्यास के नायक 'मनोहर' के आदर्शवादी व्यक्तित्व के मूल्यांकन संदर्भित निष्कर्ष प्रदान करना।

- **परिकल्पना :-** प्रस्तुत शोध हेतु निम्नांकित परिकल्पना निर्मित की गई:-

1) श्री जयप्रकाश कर्दम द्वारा रचित उपन्यास 'उत्कोच' के नायक 'मनोहर' का व्यक्तित्व उपन्यास में चित्रित उसके चरित्र चित्रण व उद्धरणों के आकलन द्वारा आदर्शवादी पाया जायेगा।

- **शोध प्रविधि :-** प्रस्तुत शोध-पत्र में वर्णनात्मक एवं समीक्षात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।
- **'उत्कोच' उपन्यास का परिचय :-**

डॉ. जयप्रकाश कर्दम जी का यह तीसरा प्रकाशित उपन्यास है। यह सन् 2019 में राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुआ था। इसमें कुल बारह इकाईयाँ हैं, उनमें इस उपन्यास का कथानक सिमटा हुआ है। इस उपन्यास के प्रभाव पात्रों का विवरण इस प्रकार है:-

1) मनोहर - नायक
2) श्यामा - नायिका (मनोहर की पत्नी)
3) गौण पात्र - सुजाता (मनोहर की माँ), कपिल (मनोहर का भाई), आनन्द (श्यामा का भाई), मनोहर की बेटी, मनोहर के सहकर्मी।

इस उपन्यास की भूमिका में कर्दम जी ने लिखा है - "यदि भ्रष्टाचार पर अंकुश नहीं लगेगा तो यह इतना विकराल रूप ले लेगा कि आपके बच्चों को नौकरी नहीं मिल पायेगी। आप जैसे लोग भी अपने बच्चों के लिये नौकरी नहीं खरीद सकेंगे।"[3] उपन्यास का प्रमुख विषय (रिश्वत) भ्रष्टाचार का मुद्दा है। भारत के सामान्य जीवन जीने वाले व्यक्ति रोजमर्रा की जिंदगी में थोड़े बहुत पैसों की रिश्वत देकर जो काम निकालवाता है, उनकी कामचलाऊ जिंदगी पर यह उपन्यास आधारित है और 'भ्रष्टाचार' पर इसने अपना ध्यान केन्द्रित किया है। कर्दम जी ने अनेक घटनाक्रमों के माध्यम से रिश्वत और भ्रष्टाचार को उपन्यास में उजागर किया है।

इस उपन्यास में दलित जाति का भी चित्रण किया है कि कैसे कोई दलित जाति का कर्मचारी अपना काम ईमानदारी से करता है पर भ्रष्टाचार आधारित व्यवस्था उसे ईमानदारी से काम करने नहीं देती है। लेखक ने इस उपन्यास में नारी के स्वाभाव को अभिव्यक्त करने में भी अपनी अभिव्यक्ति की है। नायक 'मनोहर' की पत्नी श्यामा पार्टी में सबसे हल्के कपड़े पहनकर जाती है तब उसे अपने पति से भी कम तनख्वाह वाले कर्मचारी की पत्नी की भी साड़ी उससे अच्छी दिखाई देती है। तब उसे बहुत गुस्सा आता है। मनोहर के आदर्शवादी विचारधारा का ही यह एक रूप है।

उपन्यास की भाषा प्रभावशाली सरल-सहज व कथानक-परिवेष के संदर्भ में उपयुक्त है, जो समाज में उपस्थित हर पहलू पर प्रहार करती अनुभव होती है। सभी पात्रों का चरित्र चित्रण कथानक के अनुरूप है।

- **'उत्कोच' उपन्यास के नायक 'मोहन' का व्यक्तित्व :-**

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र नायक 'मनोहर' को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उपन्यासकार ने प्रस्तुत किया है, जो किसी भी रूप में रिश्वत और भ्रष्टाचार का समर्थन नहीं करता। वह बेहद ईमानदार है और इसी ईमानदारी के कारण उसकी तरक्की नहीं हो पाती है। 'मनोहर' पिछड़ी जाति का होकर विक्रय कर विभाग में क्लर्क पद पर रहते हुए कई बार ऑफिसर पद की परीक्षा तो पास कर लेता है पर हर बार साक्षात्कार में कम अंकों के कारण उसे 'क्वालिफाय' नहीं किया जाता है। यहाँ पर लेखक ने रिश्वत की ओर संकेत किया है। कर्दम जी ने उपन्यास में बताया है कि 'मनोहर' किसी भी रूप में चाहे वह रोजमर्रा के बिल पास करने, फाईल आगे बढ़ाने या खुद की तरक्की का मामला हो, रिश्वत, भ्रष्टाचार, बेईमानी का कतई न समर्थन करता है न स्वयं करता है। इसके बावजूद बदले की भावना से प्रेरित होकर उसे एक-दो बार अपने ही ऑफिस में रिश्वत लेने के झूठे केस में फंसा दिया जाता है, पर हर बार वो निर्दोष साबित होता है, यही घटनाचक्र उसके आदर्शवादी व्यक्तित्व के परिचायक है। अपनी आदर्शवादिता के कारण उसे अपने सवर्ण सहकर्मियों की उपेक्षा, उपहास और उत्पीड़न का षिकार होना पड़ता है। इसके अलावा घर में भी उसकी पत्नी उसकी इसी आदर्शवादिता के कारण नाराज रहती है और तनाव के कारण बीमार पड़ जाती है, मनोहर ठीक से उसका इलाज भी नहीं करा पाता है, तब वह अपने भाई आनन्द के साथ चली जाती है और अन्त में बीमारी के कारण, तनाव के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है।

- **'उत्कोच' उपन्यास के कथन के उद्धरणों के माध्यम से नायक 'मनोहर' के आदर्शवादी व्यक्तित्व का आकलन :-**

'उत्कोच' का आरम्भ ही मार्मिक है जहाँ मनोहर पिछड़ी जात का क्लर्क है, विक्रय विभाग में पदोन्नति हेतु विभाग की कई बार लिखित परीक्षा उत्तीर्ण कर लेता है, पर रिश्वत न देने के कारण उसे साक्षात्कार में कम अंक मिलते हैं और उसे पदोन्नति हेतु अयोग्य करार घोषित किया जाता है। कारण यही था कि उसके पास रिश्वत तंत्र में फिट होने के लिये मोटी रकम नहीं थी, इसके अलावा वह सदैव अपने सिद्धांतों, नैतिक मूल्यों एवं भ्रष्टाचार विरोधी खैमे तथा अपनी आदर्शवादिता पर अडिग रहता है। इसी वजह से वह अपने कार्यालय के सभी कर्मचारियों का अप्रिय पात्र है। उपन्यास में मनोहर कहता है "साक्षात्कार में निकल नहीं पाया। हालांकि हर बार मेरा साक्षात्कार अच्छा हुआ, लेकिन हर बार मुझे साक्षात्कार में कम नम्बर मिले और मैं ऑफिसर बनने में सफल नहीं हो सका। लिखित परीक्षा में मुझसे कम

अंक पाने वाले लोग साक्षात्कार में अधिक अंक पाकर सफल हो गये। जबकि उनका साक्षात्कार भी मुझसे अच्छा नहीं हुआ था।"4 इस तरह कर्दम जी ने भ्रष्टाचार को दर्षा कर मनोहर के ईमानदारी के मूल्य को अभिव्यक्त कर उसके आदर्शवादी चरित्र का चित्रण किया है।

उपन्यास के कथानक में एक स्थान पर घटनाक्रम में वर्णित है कि एक दो बार अपने ही कार्यालय में रिश्वत लेने के झूठे केस में मनोहर को उसके सहयोगियों एवं अधिकारियों ने मिली-भगत कर फंसा दिया था पर वो जाँच के दौरान निर्दोष पाया जाता था। "जांच अधिकारी को इस बात का विष्वास था कि मनोहर रिश्वत मांग नहीं सकता है इसलिए षिकायत को पढ़ते ही उसके मस्तिष्क में पहली प्रतिक्रिया यही हुई। रिश्वत मांगने की षिकायत और वह भी मनोहर के खिलाफ ? एकदम फर्जी है। इसके पीछे जरूर कोई बात होगी। उसे षिकायकर्ता की मानसिकता पर तरस भी आया और अफसोस कि उसने मनोहर जैसे ईमानदार व्यक्ति के खिलाफ झूठी षिकायत क्यों की? वह जानता था कि इस षिकायत में कोई दम नहीं है।"5 इन दोनों उद्धरणों के माध्यम से हम कह सकते हैं कि मनोहर का व्यक्तित्व आदर्शवादी हैं क्योंकि ईमानदारी, नैतिकता उसमें कूट-कूट कर भरी है।

- **पारिवारिक रिश्तों के प्रति समर्पित भावना -**

मनोहर अपनी पत्नी के प्रति रिष्ते निर्वाह करने में भी ईमानदार बताया गया है। "पत्नी श्यामा की बीमारी पर जब बहुत खर्च हो रहा था तब एक दिन मनोहर को दुःखी और परेषान देखकर श्यामा ने उससे कहा - "मैं देख रही हूँ, तुम बहुत परेषान हो। इतना पैसा भी खर्च कर रहे हो, इतने परेषान मत हो।" मनोहर ने उसे सांत्वना देते हुए कहा - "कितना पैसा खर्च हो रहा है, इसकी चिंता तुम मत करो। तुम बस जल्दी से ठीक हो जाओ। 'पता नहीं कहाँ-कहाँ से इंतजाम कर रहे हो तुम ?' श्यामा ने अपनी चिंता दोहरायी। 'सब कुछ हो जायेगा, श्यामा, मैं सब कर लूंगा। तुम इसकी चिंता बिल्कुल भी मत करो।' मनोहर ने श्यामा को इस ओर से चिंतामुक्त रखने की कौषिष करते हुए कहा "कहाँ से कर लोगे तुम ? कोई जमा-पूंजी तो है नहीं तुम्हारे पास। किसी न किसी से कर्ज लोगे। इतना कर्ज में डूब जाओगे तो कहाँ से चुकाओगे?' इस बार श्यामा के शब्दों में चिंता से अधिक उलाहना सा था। फिर जीपीएफ की धनराषि जल्दी निकालवाने के लिये कहती है - 'काम जल्दी करवाने के लिये रिश्वत देनी पड़ती है। बिना कुछ लिये वे भी कहाँ फाइल आगे बढ़ाते हैं और तुम रिश्वत दोगे नहीं?' श्यामा का स्वर व्यंग्यात्मक था।"6

इस उद्धरण से स्पष्ट है कि मनोहर अपनी पत्नी के प्रति समर्पित, निष्ठावान व उसके स्वास्थ्य के प्रति चिंतित था, इलाज के पैसों के लिये प्रयत्नशील था, जिसे उसकी पत्नी स्वयं महसूस भी करती थी मगर वह अपनी ईमानदारी पर इतना अडिग था कि पत्नी के बीमा होने पर भी वह

रिश्वत देकर जीपीएफ के लोन हेतु फाइल भुगतान हेतु आगे नहीं बढ़वाना चाहता था। श्यामा के उपालम्भों, उलाहनों और व्यंग्य के बावजूद वह श्यामा को उसके भाई के साथ जाने से नहीं रोक पाता है, क्योंकि भाई के यहाँ इलाज अच्छा होगा और धन भी नहीं लगेगा, खर्चा भाई का होने वाला था और कम भी क्योंकि सरकारी अस्पताल में इलाज होना था।

- **पुत्री के प्रति कर्तव्यों का निर्वाह -**

पत्नी 'श्यामा' की मृत्यु के बाद जब सारे परिवार वाले मनोहर की दूसरी शादी के लिये दबाव बनाते हैं तो वह अपनी मृत पत्नी के प्रति भी ईमानदारी निबाहते हुए आदर्शों पर कायम रहकर अपनी बेटी 'सुजाता' को विमाता के दुःख को न देखना पड़े, दूसरे विवाह से इन्कार कर देता है, यहाँ इस उद्धरण से सिद्ध होता है कि मनोहर का व्यक्तित्व आदर्शवादी है और वो अपने रिश्तों के प्रति ईमानदार और वफादार है। बेटी के सुख के आगे वह अपनी खुशियों को नजरअंदाज कर देता है।

- **कार्य के प्रति लगन व निष्ठा -**

पत्नी 'श्यामा' की मृत्यु के दौरान जब वह अपने कार्यालय से अवकाष मांगता है तो बड़े बाबू कमिष्नर के आने की बात कहकर उसे छुट्टी नहीं देते हैं बल्कि और ज्यादा काम दे देते हैं - "पूरे दफ्तर में सबको मनोहर की पत्नी की मृत्यु का पता था। उसके दफ्तर पहुँचने पर सबने उसके प्रति संवेदनाएँ व्यक्त की थीं। ऐसे में एस.डी.ओ. साहब को यह पता नहीं हो, ऐसा नहीं हो सकता था, किन्तु मनोहर के प्रति शोक संवेदना का कोई शब्द कहे बिना, उसने जिस अपेक्षापूर्ण लहजे में बात कर उसे छुट्टी देने से इंकार किया था, उससे मनोहर ने स्पष्ट रूप से समझ लिया था कि एस.डी.ओ. के अंदर मनुष्यता नाम की चीज नहीं है। वह मानवीय संवेदनाओं से शून्य है।"7 इस उपेक्षापूर्ण अमानवीय व्यवहार के बावजूद वह बड़े बाबू के आदेषानुसार सारे पेंडिंग काम निपटाकर रोजमर्रा के काम भी पूरे कर देता है और मन ही मन निःषब्द इस असहनीय दुःखद पत्नी की मृत्यु की पीड़ा को सहकर, अपमान सहकर अपने कार्य को पूरी निष्ठा व लगन से सम्पन्न करता है। यहाँ भी मनोहर के व्यक्तित्व के चित्रण में आकलन करने पर कार्य के प्रति समर्पित मेहनती व निष्ठावान आदर्शवादी युवक के दर्षन होते हैं।

- **अधिकारियों की दृष्टि में मनोहर के व्यक्तित्व का मूल्यांकन -**

मनोहर पर लगाये गये अभियोग की जांच के पष्चात जांच अधिकारी ने मनोहर को बुलाकर कहा - " 'मनोहर' मैं जानता हूँ कि तुम एक ईमानदार और नेक इंसान हो, और हमेषा नियमानुसार ही काम करते हो। हमारे विभाग में तो क्या, दुनिया में तुम्हारे जैसे लोग बहुत कम हैं, जिनकी मूल्यों में आस्था है और जिनके अंदर मानवीय मूल्य इतने गहरे तक बैठे हैं। तुम एक मिसाल हो। तुम्हारे खिलाफ इस तरह षिकायतों से मुझे दुःख है। मेरा विष्वास है कि

तुम इस तरह की षिकायतों से विचलित नहीं होंगे। मनोहर कहता है - जी ! शुक्रिया सर ! मुझ पर आपका यह विष्वास मेरे लिये बड़ी बात है, मैं आपके विष्वास को बनाये रखने की पूरी कौषिष करूँगा सर। "अफसर मनोहर का मनोबल बढ़ाते हुए बोला - 'शाबास जाओ। निर्भय होकर काम करो।"8

इन उद्धरणों से पूर्णतया स्पष्ट आकलित होता है कि मनोहर में ईमानदारी व अन्य मानवीय, नैतिक मूल्य जैसे सह्रदयता, वफादारी, विनम्रता, कार्यसंलग्नता, निर्भीकता आदि कूट-कूट कर भरे थे। जब मनोहर की पत्नी 'श्यामा' जीवित थी तब उसके और मनोहर के बीच धन को कमी को लेकर कई बार वाद-विवाद होते रहते थे। जब ज्यादा बहस और श्यामा के कटाक्ष बढ़ने लगे तो मनोहर ने कहा दिया -"तो छोड़ दो मुझे। दे दो डायवोर्स! हो जाओ मुक्त। सुधार लो अपनी भूल।"9 इन सबके बावजूद मनोहर ने अपनी ईमानदारी का दामन नहीं छोड़ा।

- **विपरीत परिस्थितियों में धैर्य -**

'उत्कोच' में दलित विमर्ष के भी स्वर है। मनोहर के सहकर्मियों द्वारा मनोहर को रिश्वत लेने हेतु समझाने के लिए उकसाया जाता है कि सभी रिश्वत लेते हैं, हम अगर नहीं लेंगे तो क्या अंतर पड़ेगा ? छोटे-छोटे अवसर यदि भुना लिये जायें तो क्या बुराई है ? उपन्यास के कथानक के मध्य में कर्दम जी ने बतलाया है कि मनोहर के मन में भी रिश्वत लेने के लिये डाँवाडोल स्थिति निर्मित हो गई थी, मगर जीत मनोहर की ईमानदारी के मूल्य की होती है वह अपने आदर्शों पर ही डटा रहता है।

उपन्यास के अंत में घटनाक्रमों में वर्णित है कि "मनोहर का मित्र 'सुंदरलाल' जो कि रिश्वत लेने हेतु सदैव अनेक तर्क प्रस्तुत कर मनोहर को उकसाता रहता था, एक दिन ऑफिस में चुपचाप हो जाता है और मनोहर के कुरेदने पर कहता है - "तुम ठीक कहते हो मनोहर। समाज में मेहनत और ईमानदारी की कमाई से ही मान-सम्मान मिलता है। मनोहर आष्चर्यचकित होकर सच जानने के लिय पूछता है तो पता चलता है कि सुंदरलाल के बेटे 'प्रतीक' को उसके स्कूल में सुंदरलाल की ऊपरी कमाई के लिये व्यंग्य किया जाता है। स्कूल में बेटे 'प्रतीक' को दो नम्बरी की औलाद या दो नम्बरी कह कर चिढ़ाया जाता है। तब सुंदरलाल की पत्नी कहती है कि कुछ भी करो, कैसे भी करो, लेकिन घर में दो नंबर का पैसा नहीं आना चाहिये। मुझे पैसा नहीं मेरा बेटा ठीक चाहिये।"10 यही उद्धरण इस उपन्यास में ईमानदार, भ्रष्टाचार विरोधी, कार्यनिष्ठ, कर्तव्यपरायण, मनोहर के आदर्शवादी व्यक्तित्व की जीत को सुनिष्चित करता है। वह श्यामा की मृत्यु के पष्चात अपनी बेटी 'सुजाता' को अच्छी परवरिष देता है। उपन्यास के अंत में वह श्यामा की तस्वीर के आगे कहता है कि वो गलत नहीं था।

- **निष्कर्ष -**

शोध पत्र में प्रस्तुत 'उत्कोच' उपन्यास के शीर्षक का अर्थ है - रिश्वत, घूंस या भ्रष्टाचार। इस शीर्षक पर नायक 'मनोहर' की ईमानदारी का मूल्य जीत जाता है। उसका आदर्शवादी व्यक्तित्व किसी भी स्थिति में डांवाडोल नहीं होता है। इस उपन्यास में विस्तार से एक आदर्शवादी युवक 'मनोहर' के मानसिक व सामाजिक संघर्ष को चित्रित किया गया है। यह उपन्यास मूलतः भ्रष्टाचार पर केन्द्रित है, मगर कर्दम जी ने नायक 'मनोहर' के माध्यम से आदर्शवादी विचारधारा को स्थापित किया है। उपन्यास के नायक 'मनोहर' किसी भी रूप में रिश्वत का समर्थन न कर सदैव अपनी ईमानदारी पर कायम रहता है। वह सहकर्मियों, अधिकारियों, पत्नी द्वारा उपेक्षित होकर, उनके कटाक्ष, व्यंग्य झेलकर, उनके उपहास सहकर, उत्पीड़न का षिकार होकर भी अपने आदर्शवादी व्यक्तित्व को खंडित नहीं होने देता।

अतः निष्कर्षात्मक तौर पर स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि श्री जयप्रकाश कर्दम के उपन्यास 'उत्कोच' का नायक 'मनोहर' का व्यक्तित्व आदर्शवादी विचारधारा पर आधारित है, वह भ्रष्टाचार विरोधी है, रिश्वत वह किसी भी रूप व किसी भी अनुकूल, प्रतिकूल परिस्थिति में नहीं लेता है, कर्तव्यनिष्ठा, विनम्रता, कार्यपरायणता, ईमानदारी आदि नैतिक मूल्यों से वह सरोबार है, सहज व स्वाभाविक रूप से अपने कर्तव्यों का निर्वाह करता है। ऐसे ही धीर-वीर मूल्यवान आदर्शवाद युवक समाज व देष को भ्रष्टाचारविहीन बना सकते हैं, यही इस 'उत्कोच' उपन्यास का प्रतिपाद्य भी है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1) कर्दम, जयप्रकाश, 'उत्कोच' (उपन्यास), भूमिका से उद्धरित, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2019
2) कर्दम, जयप्रकाश, 'उत्कोच' (उपन्यास), भूमिका से उद्धरित, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2019
3) कर्दम, जयप्रकाश, 'उत्कोच' (उपन्यास), भूमिका से उद्धरित, राधाकृष्ण प्रकाश प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2019
4) कर्दम, जयप्रकाश, 'उत्कोच' (उपन्यास), राधाकृष्ण पब्लिलेषन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2019, पृ.सं.-80
5) कर्दम, जयप्रकाश, 'उत्कोच' (उपन्यास), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, ध्दिल्ली, प्रथम संस्करण-2019, पृ.सं.-47
6) कर्दम, जयप्रकाश, 'उत्कोच' (उपन्यास), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2019, पृ.सं.-18-19

7) कर्दम, जयप्रकाश, 'उत्कोच' (उपन्यास), राधाकृष्ण पब्लिकेषन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2019, पृ.सं.-43-44
8) कर्दम, जयप्रकाश, 'उत्कोच' (उपन्यास), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2019, पृ.सं.-50
9) कर्दम, जयप्रकाश, 'उत्कोच' (उपन्यास), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2019, पृ.सं.-104-105
10) कर्दम, जयप्रकाश, 'उत्कोच' (उपन्यास), राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2019, पृ.सं.-149-150